Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

3 पृष्ठभूमि घटना दर → Background event rate) पृष्ठभूमि घटना इसे तात्पर्य ऐसी घटना से है जिसमें विवेचित उद्दीपक जिसकी पहचान व्यक्ति को करना होता है, एक तरह से छिपा होता है। जोंकिसन तथा पिकेट ने इसी एक प्रयोग करके दिखाने की कोशिश की है। इस प्रयोग में प्रयोज्य को एक दण्डाकार रोशनी के आवृत्तीय गति पर लगातार 80 मिनट तक ध्यान देने के लिए कहा गया। यह दण्डाकार रोशनी एक प्रारंभ बिंदु से दायीं ओर खास दूरी तक आगे बढ़ती थी फिर वहाँ से वापस उस प्रारंभ बिंदु पर आ जाती थी और फिर वही दूरी तक आगे बढ़कर पुनः अपने प्रारंभ बिंदु पर लौट आती थी। इस तरह से दण्डाकार रोशनी अपने प्रारंभ बिंदु से आगे एवं पीछे दो बार हुआ करती थी। इन दोनों गतियों को मिलाकर एक event कहा गया। critical signal जिसे प्रयोज्य को पहचान करना होता है, वह था दूसरी बारी की गति में दण्डाकार रोशनी की लम्बाई में हुयी 4 km. की वृद्धि। इस प्रयोग में दो तरह की घटना गति का उपयोग किया गया। मंद घटना गति जिसमें प्रति मिनट 5 घटनाएं घटी तथा तीव्र घटना गति जिसमें प्रति मिनट 30 घटनायें घटी। इन

दोनों तरह की घटना गति दरों में विवेचित उद्दीपक या संकेत की पहचान प्रयोज्यों को करना था, की आवृत्ति बराबर रखी गयी। परिणाम में देखा गया कि विवेचित उद्दीपक या संकेत की पहचान की प्रतिशत मंद घटना गति में तीव्र घटना की गति की तुलना में काफी अधिक थी। इस प्रयोग से यह स्पष्ट हो जाता है कि दीर्घीकृत अवधान का गुण पृष्ठभूमि या तटस्थ घटनाओं की उपस्थिति की दर से प्रतिलोमित रूप से सम्बन्धित होता है।

4 सामयिक एवं स्थानिक अनिश्चितता

Temporal and spatial uncertainty

→ मनोवैज्ञानिकों ने Critical Signal जिसकी पहचान प्रयोज्य को करना होता है, के बारे में प्रयोज्य के मन में सामयिक अनिश्चितता को विवेचित संकेत की संख्या या सघनता में परिवर्तन करके एवं जोड़-तोड़ करके उसका दीर्घीकृत अवधान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है।

Jerison & Pickett, 1963 ने ~~पूर्व~~ पर किये गये प्रयोगों के परिणाम की समीक्षा किया और बतलाया कि एक निश्चित समय के भीतर Critical ~~Si~~signal की आवृत्ति अधिक होने से प्रयोज्यों में सामयिक अनिश्चितता औसतन कम होती है। दूसरे शब्दों में यह-

कहा जा सकता है कि जैसे -2 विवेच्चित संकेत की आवृत्ति बढ़ती है संकेत के सही-2 पहचान करने की प्रतिशत में वृद्धि होती है।

मनोवैज्ञानिकों ने स्थानिक अनिश्चितता का दोषीकृत अवधान पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया जिसमें उन्होंने प्रयोज्यों को अनुरूपी रडार प्रदर्शन की परिस्थिति में उद्दीपक को दिखलाया गया। यह कार्य कई भागों में बांटकर किया। विवेच्चित संकेत या उद्दीपक जिसका पहचान व्यक्ति को करना था, एक विशेष भाग में ही अधिकांशतः उपस्थित किया जाता था। परिणाम में यह देखा गया कि संकेत पहचान की संभावना उस भाग में सबसे अधिक पायी गयी जिसमें संकेतों की उपस्थिति की संभावना अधिक होती थी। इसी तरह का परिणाम Kulp & Alluisi 1967 के प्रयोगों में भी पाया गया।

5 परिणाम ज्ञान (knowledge of results) Mackworth, 1940 द्वारा इस क्षेत्र में किये गये आरंभिक प्रयोगों में यह देखा गया कि परिणाम ज्ञान देने से संकेतो के सही पहचान की आवृत्ति

में वृद्धि हो जाती है। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों जैसे- वार्मी तथा उनके सहयोगियों, वाइनर एवं मेयर ने भी अपने-2 प्रयोगों के आधार पर इस तथ्य की संपुष्टि किया है कि परिणाम ज्ञान देने से निगरानी कार्य में उद्दीपक या संकेत के सही-2 पहचान की आवृत्ति तथा गति दोनो में वृद्धि हो जाती है।

स्पष्ट हुआ कि दीर्घीकृत अवधान के कई निर्धारक हैं। ये सभी निर्धारकों का स्वरूप- मनोदैहिक है। इसलिए इन्हें मनोदैहिक निर्धारक भी कहा जाता है।

=